Arts Science & Commerce College
Naldurg

/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidya Warta
UGC Approved Referred Journal
Jr No 62759

विद्या वार्ता®

International Multilingual Research Journal

Issue-22, Vol-16 Jan to Mar.2018

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

Scanned by CamScanner

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

Arts Science & Commerce College Naldurg

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक संशोधन पत्रिका

विद्यावार्ता

Jan. To March 2018
Issue-22, Vol-16

Date of Publication
15 March 2018

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned by CamScanner

Arts Science & Commerce College Naldurg

25) विश्वभाषाओं से हिन्दी में अनुदित साहित्य : दशा एवं दिशा
प्रा.डॉ. हाशमबेग मिर्झा-प्रा. पाटील सुदाम दौलत || 113

26) सूर्यबाला की कहानियों में चित्रित नारी के विविध रूप
भास्कर रेखा जे., राजकोट || 116

27) जनजातीय कृषको की आर्थिक स्थिति पर आधुनिक कृषि तकनीकी का प्रभाव
डॉ. अर्चना शर्मा—पूजा बघेल, इन्दौर (म.प्र.) || 120

28) श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार धार्मिक जीवन मूल्य
प्रा. परेशकुमार के. भट्ट—डॉ. दीपल आर. दवे || 126

29) मैथिलीशरण जी की राष्ट्रीय रचनाओं में देशभक्ति
चेतना चावडा, राजकोट || 129

30) महात्मा गांधी और दलितोद्धार आन्दोलन
प्रा. डॉ.सौ.मंगला श्री. कठारे, औसा, ता.औसा जि.लातूर || 135

31) नारी चेतना के संदर्भ में मैत्रेयी पुष्पा का साहित्यिक योगदान
मिनाक्षी दवे, राजकोट || 136

32) रायगढ़ नगर में कोसा उद्योग:एक अध्ययन
डॉ. प्रभाकर पाण्डे—गरिमा जोशी, कोटा बिलासपुर (छ.ग.) || 141

33) आधुनिक संदर्भ मे जन संचार में हिन्दी की भूमिका
डॉ. हिमानी सिंह— सत्यनारायण || 146

34) सामाजिक—आर्थिक विकास में प्रधानमंत्री आवास योजना की भूमिका
डॉ. अनूप दीक्षित—इन्दु निर्मलकर, छत्तीसगड || 150

35) 'झुल्ल बड़ा देआ पत्तरा' काव्य कृति च चित्रित पर्व—तेहार
Dr. Surita Sharma, Jammu (J&K). || 153

36) शास्त्रीयसांख्य में कार्य—कारणवाद
सीमा कुमारी, होशियारपुर || 155

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned by CamScanner

Arts Science & Commerce College Naldurg

25

विश्वभाषाओं से हिन्दी में अनुदित साहित्य : दशा एवं दिशा

(हिन्दी नाटक साहित्य विशेष संदर्भ में)

प्रा.डॉ. हाशमबेग मिर्झा
शोध निदेशक
कला वाणिज्य व विज्ञान महाविदयालय, नलदुर्ग जि.उस्मानाबाद

प्रा. पाटील सुदाम दौलत
शोधछात्र, सिध्दार्थ कला वाणिज्य व विज्ञान महाविदयालय,
जाफ्राबाद, जालना

****

नाटयानुवाद पर बात करनेसे पहले अनुवाद पर ही दो एक बाते जरुरी है| पहली यह की क्या अनुवाद जरुरी है? और दूसरी यह कि क्या अनुवाद संभव है? पहले प्रश्न का उत्तर स्पष्ट रुप से हाँ है, क्योंकि अनुवाद न करने की स्थिति में बहुत कुछ जानने से हम महरुम रह जाएँगे | अनुवाद मात्र एक भाशा से दूसरी भाषा में रुपांतरण नही है, बल्कि उसके साथ संस्कृति, समाज, भूगोल, इतिहास एवं धर्म-दर्शन आदि गहरे प्रश्न जुडे हुए है, इसलिए अनुवाद एक जरुरी प्रक्रिया है| मिसाल के तौर पर क्या कालिदास, शेक्सपियर, ब्रेस्ट, कॉलरिज, ड्रायडन आदि पाश्चात्य रचनाकारो के रचनाओं का अनुवाद बार-बार होना चाहिए, तो इसका जबाब भी हाँ मे है, क्योंकि समय बदलने के साथ-साथ भाषा का स्वरुप भी बदलता है और बार-बार सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद होने से उसमें नवीनता बनी रहती है| यह बात नाटयानुवाद पर दूसरी विधाओकी अपेक्षा ज्यादा लागू होती है| विश्वभाषाओ के व्दारा अनुवाद करके उसे अपनी भाषा को समृध्द बनाना चाहिए | अरस्तू के अनुकरण सिध्दान्त' के सहारे बात करे तो अनुवाद अनुकरण के अनुकरण का अनुकरण है | यानी वह सत्य से तीन बार दूर है | इस दृष्टि से अनुवाद सर्वथा त्याज्य है| लेकिन क्रोंचे के अभिव्यंजनावाद के बहाने यह भी जानते है कि वस्तुतः अभिव्यक्ति कहे कि सृजन तो पूरी तरह से कलाकार या रचनाकार के मन में हो चुका होता है और वह उसे रंग, शब्द या ध्वनी देने की प्रक्रिया मे वास्तविक सृजन से दूर होता जाता है | वस्तुत : यह सृजन की प्रक्रिया है, सृजन की इसी प्रक्रिया में मूल कल्पना में कुछ जुडता और घटता चला जाता है, क्योंकि सृजन अंततः ट्रांस या कही अकेले में उभरी एक लीक या छवि के साथ - साथ किया गया एक ऐसा सामाजिक प्रयास है जो वैयक्तिकता का सोपान चढकर ही आ सकता है | इसलिए मानना चाहिए की सृजन का अनुवाद संभव नही, लेकिन सृजन का पुनःसृजन संभव है | इस पुनःसृजन को ही अनुवाद की संज्ञा प्रदान करते है | इसलिए अच्छी रचनाओं का अनुवाद कई - कई बार होना जरुरी हो जाता है |

शोध आलेख का उददेश :- आज आधुनिक युग में मनुष्य को आपसी बातचीत एक दूसरे के विचारोंको समजने समझाने के लिए अनुवाद की आवश्यकता है | यही अनुवाद के शोध का मूल उददेश रहा है | इस आवश्यकता की सीमा आज बढ रही है | क्योंकी प्रगती के नये नये क्षेत्र निर्माण हो रहे है | और अनुवाद की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका है | विदेशी ज्ञान विज्ञान को जानने के लिए अनुवाद कितना जरुरी है, आज भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती है | इसलिए अनुवाद का विशेष महत्व है | आपसी समन्वय, भावात्मक एकता, ज्ञान, बुध्दि संस्कृति परिचय, व्यापार वृध्दि आदि क्षेत्रो का विकास अनुवाद के बिना संभव नही है इसका शोध मेरा उददेश है |

नाटक साहित्य अनुवाद की प्रक्रिया :- अब प्रश्न यह उठता है कि क्या सभी साहित्य विधाओं के अनुवाद की प्रक्रिया एक ही है? इसका जबाब भी जरा पेचीदा है | दर्शन, शास्त्र, विचार अथवा तर्क का अनुवाद होता ही नही, बल्कि उसे एक भाषा से दूसरी भाषा में रुपांतरीत करना होता है | इसमें समस्या अवधारणात्मक शब्दो की रहती है, क्योंकि वे अवधारणात्मक शब्द शास्त्रीय एवं वैचारिक परंपरा का उत्पादन होते है और वे किसी भाषा की निजी संपदा भी | यह हम जानते है कि भाषा अंततः किसी भी समाज की बौध्दिक संपदा है और बौध्दिकता के स्तर, आयाम तथा आशय हर समाज में अलग - अलग होते है | साम्यता की स्थिति में अनुवाद में आसानी होती है, जब कि विभिन्नता या वैषम्य की स्थिति में या तो हमे उन शब्दो के पर्याय बनाने या ढूँढने होते है या फिर हम उस शब्द को उसी रुप में या थोडे बहूत फेर बदल के साथ स्वीकार कर लेते है | मिसाल के तौर पर अकादमी या स्पुतनिक जैसे शब्द |

नाटयानुवाद के लोक में प्रवेश करने से पहले यह जरुरी है कि अनुवादक को कम से कम दो भाषाओं की पर्याप्त जानकारी हो | केवल भाषा की जानकारी ही काफी नही बल्कि नाटक जिस समाज, काल भूगोल एवं परिवेश से जुडा हुआ है, उसकी जानकारी तो जरुरी है ही साथ ही उसे जिस लक्ष्य-भाषा में लाया जा रहा है, उसके समाज, भूगोल एवं परिवेश की जानकारी होना भी जरुरी है | किसी भी नाटक के अनुवाद से पहले उस नाटक के रंग-परिवेश, रंगशैली

Scanned by CamScanner

Arts Science & Commerce College Naldurg

एवं रंग परंपरा को जानना भी उतना ही जरुरी है | नाटक का अनुवाद जिस भाषा में किया जाना है, उस भाषा के रंगमंच तथा रंग परंपरा को जानना भी उतना जरुरी है | इतनी तैयारी के बाद ही किसी नाटक के अनुवाद का साहस जुटाना चाहिए | यहाँ यह भी प्रश्न उठाया जा सकता है कि क्या नाटक का अनुवाद मूल भाषा से ही हो या कि किसी तीसरी भाषा के माध्यम से भी उसका अनुवाद किया जा सकता है | वस्तुतः कोई भी व्यक्ति दुनिया की सभी भाषाएँ नही जान सकता, ऐसे में विश्वकी महान नाटय-रचनाओं से वंचित रहना भी कोई समझदारी नही है | सो अगर हमें तीसरी भाषा में भी अनुवाद उपलब्ध हो तो उसका अनुवाद भाषा में करने से गुरेज नही होना चाहिए |

हम देखते है कि अनेक इतालवी, जर्मन, बल्गारियाई, रुसी एवं फ्रैंच आदि नाटकों का हिन्दी अनुवाद मूल भाषा से न होकर अग्रेंजी के माध्यम से हुआ है और अंग्रेजी के माध्यम से ही हम उन देशो की रंग - परंपराओ से परिचित हुए है | इसलिए यहाँ अंग्रेजी ही स्त्रोत भाषा बन जाती है | इसे हम भलेही सत्य से चार बार दुर मान ले, लेकिन है यह नाटयानुवाद की प्रकिया का एक हिस्सा ही | नाटयानुवाद शुरु करनेसे पहले मूल नाटक को केवल पढना ही नही, आत्मसात करना भी जरुरी है | आत्मसात होने की प्रक्रिया में वह नाटक अनुवादक के मन में अपना रंगमंच खडा करने लगता है | नाटक के संवादो के बीच की स्पेस को समझना, रंग-निर्देशो, रंगमंच पर संभाव्य हरकतो, हलचलो, भावो, संकेतो, मुद्राओ, भंगिमाओ एवं बलाघात आदि को पकडना जरुरी है | इन सबसे भी जरुरी है पाठय एवं वाचिक शब्दके बीच की खाई को पाटना | बोले जानेवाले शब्द को साहित्य या नाटक का शब्द बनाना और साहित्यिक शब्द को वाचिक शब्द बनाना एक कठीन लेकिन सृजनात्मक प्रक्रिया है | इस प्रक्रिया को अपनाए बिना कम से कम रंग नाटक का अनुवाद संभव नही है| नाटयानुवाद करते हुए शब्द स्फीति का ध्यान रखना जरुरी है | नाटक का दर्शक प्रवचन या भाषण सुनने नही आता | वह मंचपर आए दृश्य-बंधो, गतियो, वेश-भूषा, संगीत आदी के माध्यम से नाटक देखना चाहता है | नाटक मे अतिशय वाचालता उसका नाटय-तत्व नष्ट कर देती है |नाटक का रंग व्यापार अवरुध्द न हो, अभिनेता को शब्द फेंकने के बजाय शब्दो के सहारे अपना अभिनय कौशल दिखाने का पर्याप्त अवसर मिले, इसका ध्यान नाटयानुवादक को रखना ही होगा | यानी गतिमयता नाटक में चाहिए, शब्दो में नही| हालांकि उसका वाहक शब्द ही होता है | उपरी तौर पर दिखनेवाले इस विरोधाभाषको भी नाटयानुवादक के लिए साधना जरुरी है | मूल नाटक के संवादो के बीच आई स्पेस का अनुवाद नही हो सकता |

नाटक एक जीवंत कला होने के साथ-साथ अन्य कलाओंपर आश्रित एक कला है | और सभी कलाओंके उत्स के साथ - स गहरे सामाजिक, सांस्कृतिक एवं मानवीय प्रश्न जुड जाते है नाटयानुवाद करते हुए हमे इस बात का ध्यान रखना होता कि ह अनुवाद्य नाटक में रची बसी संस्कृति एवं सामाजिकता का भी अनुव न करने लगे, बल्कि उसे उसी रुप में सुरक्षित रखे, जिस रुप में व मूल रचना में स्थित है | इसलिए हम अनुवाद्य नाटकों को दो श्रेणि में रख सकते है | भारतीय भाषाओं के नाटक एवं विदेशी भाषाओं नाटक | भारतीय समाज के विभिन्न क्षेत्रो में भाषा चाहे जो भी बोल जाती हो, एक ऐसा सूत्र है जो इन क्षेत्रों को क्षेत्रीयता के बावजूद एव भारतीय समाज का निर्माण करता है |

भारतीय समाज के सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों म बहुत बडी खाई नजर आती | पूर्वोत्तर भारत के सांस्कृतिक प्रश्न एव सामाजिक मर्यादाएँ थोडी भिन्न हो सकती है, लेकिन कमोबेश भारतीय समाज की एक छबि तो बनती ही है | ऐसे में भारत की किसी भाषा के नाटक को भारत की ही या कहे कि हिन्दी में अनुवाद करने की प्रक्रिया अपेक्षाकृत सरल और कुछ अपनी सी हो जाती है और इस बहाने हम भारत की विभीन्न रंग - शैलियो एवं रंग-परंपराओं के संपर्क में आ जाते है | वस्तुतः अनुवाद के प्रश्न तब अधिक गहरा जाते है, जब हम विदेशी नाटकों के अनुवाद करने लगते है |

विदेशी नाटकों में भी युरोपीय नाटको, अमेरिकी नाटको एवं एशियाई तथा घोषित-अघोषित पूर्व समाजवादी देशो के नाटकों को अलगाया जा सकता है | प.युरोप अथवा अमेरिकी नाटको में उपस्थित असुरक्षा का भाव, अकेलापन, अपराधबोध, नैतिक वर्जनाओ का टूटना आदि अनेक ऐसी बाते जो भारतीय समाज को उस समाज से अलग करती है, जब कि पूर्वी युरोप, रुस, चीन आदि देशों के समाज का भारतीय समाज के नैतिक मान्यताओं से भी बहुत दूर फर्क पडता है | इसलिए इन देशो के नाटको के अनुवाद तथा अमेरिका आदि देशो के नाटकों के अनुवाद करते समय अलग-अलग तरह की समस्याएँ सामने आएँगी, जिन्हे नाटयानुवाद करते हुए ध्यान में रखना होगा | क्योकि अंततः नाटयानुवाद अनुवाद्य नाटक में विहित संस्कृति का अनुवाद नही बल्कि उसका भाषांतर है | लक्ष्य भाषा की शक्ति को स्त्रोत भाषा कि शक्ति के बरकस रखकर ही हम अपने लिए नाटयभाषा की खोज कर सकते है |

नाटयानुवाद की प्रक्रिया पर बात करते हुए इस सवाल पर बात करना भी जरुरी है कि अगर पूरा मूल नाटक या उसके कुछ अंश पदय में है तो पद्य का अनुवाद पद्य मे ही करना चाहिए ताकि उन अंशो को गद्य में ढालने की छुट अनुवादक को ले लेनी चाहिए | मेरी समझ से तो पद्य का अनुवाद पद्य मे करना अभीष्ट है, क्योंकि उसे

Scanned by CamScanner

गदय में ढालकर हम उसका मूल ढाँचा ही बदल रहे होंगे | ऐसे मे अनुवादक का न सिर्फ नाटककार, बल्कि कवि होना भी जरुरी है और उसे थोडी बहुत संगीत की जानकारी भी हो तो और बेहतर| पद्य का अनुवाद पद्य में करने से छंद की समस्या सामने आती है | जाहिर है कि हमे अपनी काव्य परंपरा मे उपलब्ध छंदो पर आश्रित होना पडेगा | अगर यह संभव न हो तो अनुवादक स्वयं अपने छंद का निर्माण करके भी उसका अनुवाद कर सकता है | यह भी संभव न हो तो कम से कम लय का ध्यान तो रखना ही चाहिए |

अक्सर यह भी देखने मे आता है कि अनुवादक को जब नाटक के कुछ स्थल बहुत कठिन लगने लगते है या वह किन्ही कारणों से उनका अनुवाद नही कर पाता, तो उन्हे छोड देता है | यहाँ बहुत ही सावधानी की जरुरत है | पहली बात तो यह है कि ऐसा करना नही चाहिए, लेकिन कई बार स्थानिक शब्दो, अवधारणात्मक शब्दो या सांस्कृतिक शब्दो के समरुप शब्द लक्ष्य भाषा में उपलब्ध न होने से यह समस्या आ जाए तो अनुवादक अतिरिक्त प्रयास से शब्द निर्माण करे या फिर लोक भाषाओं में उनकी तलाश करें फिर भी संभव न हो तो भ्रष्ट अनुवाद करने से उन्हे छोडना ही बेहतर है| लेकिन इससे नाटक के मूल संवेद्य में कोई अंतर न पडे, इतना ध्यान तो अनुवादक को रखना ही होगा|

अनुवाद करते हुए क्या लक्षित दर्शक वर्ग का भी ध्यान रखना चाहिए? यह एक मुश्किल प्रश्न है और इसका जवाब भी मुश्किल है, क्योंकि नाटक का अनुवाद होने के बाद वह केवल एक से ही रंग-दर्शक के सामने खेला जाएगा, ऐसा जरुरी नही | अनुवादक को तो एक बार अपने सामने एक दर्शक वर्ग लक्षित करके अनुवाद कर देना चाहिए | प्रस्तुत आलेख मे अलग-अलग दर्शक-वर्ग, स्थान, काल एवं परिवेश के अनुसार जो परिवर्तन किए जा सकते है यह काम रंग-कर्मियो पर छोड देना चाहिए वे स्थितियो के अनुसार 'इप्रोवाईजेशन' करते ही रहते है, लेकिन अनुवादक की भूमिका को यहाँ भी नजर अंदाज नही किया जा सकता, क्योकि संवादो के माध्यमसे केवल नाटक का संवेद्य ही संप्रेषित नही होता, बल्कि चरित्रों का मन मनःस्थितियों, उनके संघातो, विश्वासो, मूल्यो-बल्कि कहना चाहिए कि चरित्रों के पूरे व्यक्तित्व की बनावट और बुनावट भी संप्रेषित होती है| अंत:अनुवादक इतनी भाषा-दक्षता एवं भाषा क्षमता होनी चाहिए कि वह नाटक के चरित्रों के व्यक्तित्व को परत दर परत रुप में उदघाटित कर सके| इस उपक्रम में भाषा मात्र किताबों से अर्जित भाषा नही हो सकती | ऐसी भाषा कितनी ही साहित्यिक या लांच्छेदार क्यों न हो, वह नाटक के किसी काम की नही होती| ऐसी कृत्रिम भाषा से न तो चरित्र प्रभावी बन पाते है और नही उनमे विश्वसनीयता आ पाती है |

प्राय: लेखक या तो संस्कृत निष्ठ हिन्दी या फिर अरबी-फारसी निष्ठ, उर्दु में नाटकों का अनुवाद कर देते है | यह दोनो ही तरह की भाषाएँ नाटक को बोझिल , उबाउ ओर सीमित कर देती है| मिसाल के तौरपर एक पात्र का संवाद है किसी दूसरे पात्र के संदर्भ मे यह है 'I am hurt' अब इसका शाब्दिक अनुवाद हो सकता है में घायल हूँ , 'में आहत हुँ', 'मे व्यथित हूँ', 'मे जख्मी हूँ ', या ऐसे ही कुछ और | लेकिन स्पष्टत: नाटककार को यह अभिप्रेत नही है | वस्तुत: इसका अनुवाद हो सकता है- 'मै दु:खी हूँ', या फिर आपने मेरा दिल ही तोड दिया है आदि संदर्भ के अनुसार लेकिन शब्दश: अनुवाद तो कभी भी नाटक मे न तो उर्जा ला सकता है और ना ही नाटकीय व्यापार | इसी के साथ बोलियों का प्रश्न भी जुडा हुआ है | हिन्दी प्रदेश में अनेक बोलियाँ है | उनके आधारपर अनुवाद आवश्यक है|

पहले यह जान लेना जरुरी है कि नाटक आखिर है क्या?

क्या संवाद - शैली में लिखी गई किसी भी कृति को हम नाटक कह सकते है? संभवत: नही | ऐसी कृतियाँ नाटक दिखती जरुर है, पर होती नही है | मिसाल के तौरपर हरिकृष्ण प्रेमी, लक्ष्मीनारायण मिश्र या सेठ गोविंददास आदि लेखकों के कई नाटक| यह नाटक पाठयतो है, लेकिन मंचन की दृष्टि से इनके नए सिरे से मंच आलेख तैयार करने की जरुरत होगी |

निष्कर्ष - नाटक मे आए हास - परिहास के क्षणों तथा वाग्वैदग्ध का अनुवाद लगभग असंभव सा हो जाता है | इसके लिए अनुवादक के पास इतना भाषा कौशल एवं अनुभव होना चाहिए तो वह उन क्षणों एवं स्थितिओ को पुन:सृजित कर सके | इसके लिए अगर रुपांतर सीमाओं मे भी प्रवेश करना पडे तो कर जाना चाहिए |

इतना सब जानने एवं करने के बाद भी अगर अनुवाद संभव हो सके तो यह संतोष की बात है लेकिन इस प्रकिया से गुजरे बिना नाटक का अनुवाद करने के बारे में न सोचना ही बेहतर है |

संदर्भ संकेत :-

१. इक्कीसवी सदी में अनुवाद दशाएँ और दिशाएँ- के.सी.कुमारन / डॉ.प्रमोद
२. हिन्दी के अधतन अनुप्रयोग-डॉ.माधव सोनटक्के
३. समकालीन हिन्दी नाटय परिदृश्य-डॉ.श्रीमती परवीन अख्तर
४. अनुवाद सिध्दांत और प्रयोग-डॉ.जी. गोपीनाथन
५. अनुवाद भाषा समस्याएँ-एनई विश्वनाथ अय्यर
६. हिन्दी अनुवाद स्वरुप और संकल्पना-गिरीष सोलंकी संकल्पना
७. विकसनशील देशो में अनुवाद की समस्या-बालकृष्ण केसकर

PRINCIPAL
Arts Science & Commerce College
Naldurg, Dist.Osmanabad-413602